UG-IV Sem.

PAGE
DATE 1/5/20

CH. 5. 'Trade - Union - Rise

ट्रेड - यूनियन का उदय

19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के प्रारंभ में भारत में आधुनिक उद्योग-धंधों की नींव पड़ी 1853 के पश्चात भारतीय संचार साधनों में मशीनों का प्रयोग होने लगा। रेल-लाइनों के बिछाने तथा इंजन के लिए कोयला निकालने में हजारों श्रमिकों को रोजगार मिला। यह भारतीय श्रमिक-वर्ग का प्रारंभिक काल था। इन परिस्थितियों में रेलवे उद्योगों से संबंध अन्य उद्योग-आयोगों का विकास भी आवश्यक था। कोयला उद्योग का भी तेजी से विकास हुआ तथा इसने हजारों श्रमिकों को रोजगार के अवसर प्रदान किये। इसके पश्चात कपास एवं जूट उद्योग का विकास हुआ।

इंग्लैंड तथा शेष संसार में औद्योगिकरण के प्रारंभिक चरण में श्रमिक वर्ग को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था, भारतीय श्रमिक-वर्ग ने भी भारत में इसी प्रकार के शोषण एवं कठिनाइयों का सामना किया। इन कठिनाइयों में कम मजदूरी, कार्य के लंबे घंटे, कारखानों में आधारभूत सुविधाओं का अभाव आदि प्रमुख थी।

भारत में औपनिवेशिक शासन की उपस्थिति ने भारतीय श्रमिक आंदोलन को एक नयी विशेषता प्रदान की। भारतीय श्रमिक वर्ग को दो परस्पर विरोधी तत्वों उपनिवेशवादी राजनैतिक शासन तथा

Scanned with CamScan

एवं भारतीय पूँजीपतियों के शोषण का सामना करना पड़ा। इन परिस्थितियों के कारण भारतीय श्रमिक आंदोलन, अनिवार्य रूप से राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष का एक हिस्सा बन गया।

⊛ प्रारंभिक प्रयास :- प्रारंभिक राष्ट्रवादी, विशेषकर उदारवादी :-

* भारतीय श्रमिकों की माँगों के प्रति उदासीन थे।
* ब्रिटिश स्वामित्व वाले कारखानों में कार्यरत श्रमिकों एवं भारतीयों के स्वामित्व वाले कारखानों में कार्यरत श्रमिकों को अलग-अलग मानते थे।
* इनका मत था कि श्रमिक विधानों के निर्माण से भारतीयों के स्वामित्व वाले उद्योगों पर बुरा असर पड़ेगा।
* वर्गीय आधार पर आंदोलन में विभाजन के पक्षधर नहीं थे।

इसीलिए उक्त कारणों से 1881 तथा 1891 के कारखाना अधिनियमों का इन्होंने समर्थन नहीं किया।

इसप्रकार श्रमिकों की दशाओं में सुधार के लिए किये गये प्रारंभिक प्रयत्न आत्म-केंद्रित थे तथा इनकी प्रकृति पृथक, वैयक्तिक एवं विशिष्ट एवं स्थानीय समस्याओं की थी।

Scanned with CamScanner

(*) **1870:—** शशीपद बनर्जी ने एक श्रमिक क्लब की स्थापना तथा श्रमजीवी नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया।

(*) **1878:—** सोराबजी शापुर्जी बंगाली ने श्रमिकों को कार्य की बेहतर दशाएँ उपलब्ध कराने के लिए एक विधेयक प्रस्तुत किया जिसे बाद में बंबई - विधान परिषद ने पारित कर दिया।

(*) **1880:—** नारायण मेघाजी लोखंडे ने दीनबंधु नामक समाजार-पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया तथा बॉम्बे मिल एवं मिलहैंड्स एसोसिएशन की स्थापना की।

(*) **1899:—** ग्रेट इंडियन पेनिन्सुलर रेलवे की प्रथम हड़ताल आयोजित की गयी। इस हड़ताल को अभूतपूर्व समर्थन प्राप्त हुआ। तिलक ने अपने समाचार-पत्रों मराठा एवं केसरी के द्वारा हड़ताल का भरपूर समर्थन किया।

इस समय देश के कई प्रख्यात राष्ट्रवादी नेताओं तथा विपिनचंद्र पाल एवं जी० सुब्रह्मण्यम अय्यर ने भारतीय श्रमिकों की दशा में सुधार करने तथा उनके लिए नियम-कानून बनाये जाने की माँग की।

PAGE
DATE

(*) स्वदेशी आंदोलन के दौरान :--

श्रमिकों ने विस्तृत राजनीतिक गति-विधियों में भागेदारी निभायी। अश्विनी कुमार बानर्जी, प्रभात कुमार राय चौधरी, प्रेमतोष बोस एंव अपूर्व कुमार घोष ने अनेक हड़तालों का आयोजन किया। इनकी हड़तालों के क्षेत्र थे सरकारी मुद्रणालय, रेलवे एंव जूट उद्योग।

इस समय श्रमिक एंव व्यापार संघों की स्थापना के प्रयत्न भी किये गये किंतु इन्हें अधिक सफलता नहीं मिली। सुब्रह्मण्यम अय्यर एंव चिदम्बरम पिल्लई के नेतृत्व में हड़तालों का आयोजन किया गया। बाद में इन दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया

तत्कालीन सबसे बड़ी हड़ताल का आयोजन उस समय किया गया, जब बाल गंगाधर तिलक को गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाया गया। गाँधी जी ने अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन (1918) की स्थापना में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया तथा इसके साथ मिलकर श्रमिकों की मजदूरी में 27·5 प्रतिशत वृद्धि करने के लिये चलाये गये आंदोलन को समर्थन किया। अंत: यह आंदोलन सफल रहा तथा श्रमिकों की मजदूरी में 27·5 प्रतिशत की वृद्धि कर दी गयी।

Scanned with CamScanner

ट्रेड-यूनियन अधिनियम 1926

इस अधिनियम द्वारा :-

* व्यापार संघों को वैध संगठनों के रूप में मान्यता दे दी गयी।

* व्यापार संघों की गतिविधियों के पंजीकरण एवं नियमन संबंधी कानूनों की व्याख्या की गयी।

* व्यापार संघों की गतिविधियों को नागरिक एवं आपराधिक गतिविधियों की परिधि से बाह्य माना गया किंतु उनकी राजनीतिक गतिविधियों के लिए कुछ सीमाएँ भी तय कर दी गयी।

श्रमिक विवाद अधिनियम 1929 द्वारा :-

* श्रमिक विवादों के समाधान हेतु जाँच एवं परामर्श आयोग की स्थापना को अनिवार्य बना दिया गया।

* रेलवे, डाक, पानी, विद्युत जैसी सार्वजनिक सेवाओं में उस समय तक हड़ताल नहीं की जा सकती थी, जब तक प्रत्येक श्रमिक लिखित रूप से एक मास की पूर्व सूचना प्रशासन को न दे दें।

Scanned with CamScanner

PAGE
DATE

⑥

1947 की अवधि में, श्रमिकों ने युद्ध उपरांत हुए राष्ट्रीय आंदोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। 1945 में बंबई एवं कलकत्ता के शहरी मजदूरों ने इंडोनेशिया भेजे जाने वाले सामानों को जहाजों पर लादने से इंकार कर दिया। 1946 में शाही नौसेना में विद्रोह होने पर मजदूरों ने इसके समर्थन में हड़ताल की। उपनिवेशी शासन के अंतिम वर्ष में मजदूरों ने पोर्ट, रेलवे एवं अन्य प्रतिष्ठानों में आयोजित हड़तालों में भागेदारी निभायी। स्वतंत्रता के पश्चात श्रमिक युनियन के द्वारा श्रमिक आंदोलन का ध्रुवीकरण एवं उदय होगया।